'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक—१

पुरश्चरणविधानविभूषितं

प्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्

'शिवदत्ती' भाषाटीका-व द-सहितम्

•

सम्पादकः 9441188158

आचार्य पं० श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री

•

प्रकाशकः

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा : ब्रांच-कचौड़ीगली, वाराणसी

मूल्यम् ०'६०

VedantaSangraham

Scanned by CamScanner

वेद, व्याकरण, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, स्तोत्र एवं तन्त्र ग्रन्थों
के प्रख्यात लेखक तथा सम्पादक

आचार्य पं० श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक—६

प्रत्यङ्गिरास्तोत्रम्

*

'देवरिया'-मण्डलान्तर्गत-'मझौली राज्य'-(सम्प्रति वाराणसी) वास्तव्य-पण्डितश्रीसन्तशरण-मिश्रशर्मणामात्मजेन

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्र-शास्त्रिणा

'शिवदत्ती' भाषाटीकया सम्भूष्य

सम्पादितम्

*

प्रकाशकः

ठाकुरप्रसाद ऐण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा : ब्रांच-कचौड़ीगली, वाराणसी

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

दो शब्द

* *

कुंचिकातन्त्र से निकालकर, सर्व-साधारण की सुविधा के लिए, प्रस्तुत स्तोत्र प्रकाशित किया गया है। इसके पाठ एवं अनुष्ठान से मुकदमे में विजय तथा कैसा भी प्रबल शत्रु क्यों न हो, उसका पराजय अवश्य होता है।

इसमें स्तोत्रपाठ का फल, यन्त्र-निर्माण विधि एवं फल, स्तोत्र, मन्त्रजप-गोलकन्यन्त्र विधान, पुष्प समर्पण विधि, पुरश्चरण विधि आदि विषय दिये गये हैं।

मूल पाठ की शुद्धता एवं भाषाटीका के साथ आधुनिक शैली में संशोधन-सम्पादन ही इसकी प्रधान विशेषता है। इन विशेषताओं के साथ यह स्तोत्र अन्यत्र कहीं से भी अबतक नहीं प्रकाशित था।

वाराणसी
१५ अगस्त, १९६७

—शिवदत्तमिश्र शास्त्री
५।२६ ए०, भिखारीदास लेन,
वा रा ण सी-१

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

ध्यानम्

टङ्कं कपालं डमरुं त्रिशूलं
सम्बिभ्रती चन्द्रकलावतंसा ।
पिङ्गोर्ध्वकेशो-ऽसित-भीमदंष्ट्रा
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

श्रीगणेशाय नमः

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतं

श्रीं प्रत्यंगिरा स्तोत्रम्

'शिवदत्ती' भाषाटीकयाऽलंकृतम्

० ०

विनियोग.

अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र-मन्त्रस्य वामदेव-ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, प्रत्यङ्गिरा देवता, ह्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, सर्वार्थ-साधने विनियोगः।

---

* शिवदत्ती *

विनियोग—हाथ में जल लेकर 'अस्य श्रीप्रत्यङ्गिरा-स्तोत्र-मन्त्रस्य' से आरम्भ कर सर्वार्थ-साधने विनियोगः' तक पढ़कर जल को नीचे किसी पात्र में गिरा देना चाहिए।

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

मन्दरस्थं सुखासीनं भगवन्तं महेश्वरम् ।
समुपागम्य चरणैः पार्वती परिपृच्छति ॥ १ ॥

देव्युवाच

धारणीया महाविद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदया ।
नर-नारी-हितार्थाय बालानां रक्षणाय च ॥ २ ॥
राज्ञां माण्डलिकानां च दीनानां च महेश्वरम् ।
विदुषां च द्विजातीनां विशेषेणाभ्रसाधिनी ॥३॥

मन्दराचल पर सुखपूर्वक बैठे हुए भगवान् शंकर के पास आकर पार्वती ने पूछा ॥१॥ देवी ने कहा— जो प्रत्यङ्गिरा नामक महाविद्या उत्तम फल देने वाली है, जिससे स्त्री-पुरुषों का हित तथा बालकों की रक्षा होती है ॥२॥

माण्डलिक राजा, दीनजन, विद्वान् तथा द्विजातियों का जो विशेष रूप से मनोरथ सिद्ध करने वाली हैं ॥ ३ ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

महाभयेषु घोरेषु विद्युदग्नि-भयेषु च ।
व्याघ्र-दंष्ट्रा-कराघाते नदी-नद-समुद्रगे ॥४॥
श्मशाने दुर्गमे घोरे सङ्ग्रामे शत्रुसङ्कटे ।
अभिचारेषु सर्वेषु रणे राजकुलेषु च ॥५॥
धारिता पाठिता देवि ! समीहितफलप्रदा ।
पाठिता साधकेन्द्रेण कारयेत् स्वान् मनोरथान्॥६॥
सौभाग्यजननीं नित्यं नृणां वश्यकरीं तथा ।
तां सुविद्यां सुरश्रेष्ठ ! कथयस्व मयि प्रभो ! ॥७॥

भयंकर महाभय, बिजली, अग्निभय, व्याघ्र, नदी, नद, समुद्र, श्मशान, दुर्गस्थान, घोर संग्राम, शत्रु-संकट, मारणादि अभिचार और राजकुल आदि में धारण तथा पाठ से जो अभिलषित वस्तु देनेवाली है, साधकों के द्वारा पढ़ने पर जो सभी मनोरथ पूर्ण करती है ॥ ४-६ ॥

जो सम्पूर्ण सौभाग्यों की जननी तथा समस्त

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

भैरव उवाच

साधु साधु महाभागे ! जन्तूनां हितकारिणि ! ।
त्वद्वाक्येन सुरारिघ्ने ! कथयामि न संशयः ॥८॥
देवी प्रत्यङ्गिरा विद्या सर्वग्रहनिवारिणी ।
मर्दिनी सर्वदुष्टानां सर्वपापप्रणाशिनी ॥९॥

मनुष्यों को वश में करने वाली है, हे सुरश्रेष्ठ, आप मुझे उस विद्या को बताइए ? ॥७॥

भैरव ने कहा—हे प्राणियों का हित करने वाली, महाभागे, पार्वती, तुमने यह प्रश्न ठीक ही किया। हे असुरों का विनाश करनेवाली, मैं उस महाविद्या को तुमसे कह रहा हूँ, इसमें संशय नहीं है ॥८॥ प्रत्यङ्गिरा देवी जो महाविद्या के नाम से विख्यात हैं। वही सम्पूर्ण ग्रहों को निवारण करने वाली, दुष्टों का मर्दन करने वाली तथा समस्त पापों का विनाश करने वाली. है ॥ ९ ॥ वह देवी सौभाग्य

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

सौभाग्यजननी देवी बलपुष्टिकरी तथा ।
चतुष्पथेषु घोरेषु वनेषु पवनेषु च ॥१०॥
राजद्वारेषु दुर्भिक्षे महाभय उपस्थिते ।
पठिता पाठिता विद्या सर्वसिद्धिकरी स्मृता॥११॥
लिखित्वा च करे कण्ठे बाहौ शिरसि धारयेत् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो मृत्युं नास्ति कदाचन ॥१२॥

की जननी (माता), बल तथा पुष्टि प्रदान करने वाली है, चतुष्पथ, घोर बन, झंझावात, ॥१०॥ राजद्वार, दुर्भिक्ष तथा महा भय उपस्थित होने पर पढ़ने तथा पाठ कराने से सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली है॥११॥ जो महाविद्या के इस मन्त्र तथा यन्त्र को लिखकर बाहु, हाथ, कण्ठ तथा शिर में धारण करते हैं वे सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाते हैं और कभी अकाल मृत्यु से नहीं मरते ॥ १२ ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

धारयेद्योगयुक्तो यस्तस्य रक्षा भवेद् ध्रुवम् ।
धारिता वाऽर्चिता विद्या प्रत्यङ्गिरा शुभोदिता।१३
गृहे चैवाऽष्टसिद्धिश्च देव-राक्षस-पन्नगाः ।
न तस्य पीडां कुर्वन्ति ये चाऽन्ये पीडकग्रहाः ।१४
विद्यानामुत्तमा विद्या पठिता वाऽर्चिता सदा ।
यस्याऽङ्गस्था महाविद्या प्रत्यङ्गिरा सुभाषिता।१५

योग से युक्त पुरुष यदि इस महाविद्या के यन्त्र तथा मन्त्र को धारण करे तो निश्चय ही उसकी रक्षा होती है। धारण तथा अर्चन-पूजन से यह प्रत्यंगिरा शुभफल देने वाली है ॥ १३ ॥ उसके घर में आठों सिद्धियों का निवास रहता है, देवता, राक्षस, पन्नग (सर्प) तथा अन्य पीड़ाकारक ग्रह उसके घर में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं करते ॥ १४ ॥ विद्याओं में सर्वोत्तम महाविद्या प्रत्यंगिरा भाषण से, पाठ से अर्चन से सिद्धि

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

सिद्धा सुसिद्धिदा नित्या विद्येयं परमा स्मृता ।
श्रीमता घोररूपेण भाषिता घोररूपिणी ॥१६॥
प्रत्यङ्गिरा मया प्रोक्ता रिपून् हन्यान्न संशयः ।
हरिचन्दनमिश्रेण गोरोचन-कुङ्कुमेन च ॥१७॥
लिखित्वा भूर्जपत्रेषु धारणीया सदा नृभिः ।
पुष्प-धूपैर्विचित्रैश्च बल्युपहार-पूजनैः ॥१८॥

को प्रदान करने वाली है। यह महाविद्या नित्य है, भगवान् शंकर ने घोर (निष्पाप) रूप धारण कर इस घोररूपिणी (निष्पापा) महाविद्या का व्याख्यान किया है ॥१५-१६॥

भगवान् भैरव ने कहा—हे पार्वती, मैं जिस प्रत्यंगिरा को तुम से कह रहा हूँ वह शत्रुओं का विनाश करने वाली है। हरिचन्दन, गोरोचन, कुंकुम से ॥१७॥ भोजपत्र पर लिख कर इस प्रत्यंगिरा को मनुष्य को धारण करना चाहिए।

Vedanta Sangraham
Vedanta sangraham
Scanned by CamScanner

पूजयित्वा यथान्यायं शान्तकुम्भेन वेष्टयेत् ।
धारयेद् य इमां विद्यां निश्चितां रिपुनाशिनीम् ।१९।
विलयं यान्ति रिपवः प्रत्यङ्गिराविधानतः ।
यद्यत् स्पृशति हस्तेन यद्यत् खादति जिह्वया॥२०॥
अमृतं तद्भवेत् सर्वं मृत्युर्नास्ति कदाचन ।
कर्मणा यो जपेद्यस्तु कृत्रिमं दारुणं सदा ॥२१॥

पुष्प, धूप तथा विचित्र पुष्पों तथा बलि से नित्य पूजा करनी चाहिए ॥ १८ ॥

उपर्युक्त विधि से पूजा कर स्वर्ण के समान पीले वस्त्र से इसे लपेट कर धारण करने से निश्चय ही यह शत्रुवर्ग का विनाश करने वाली है ॥ १९ ॥

प्रत्यंगिरा के शास्त्रीय अनुष्ठान मात्र से समस्त शत्रु विनष्ट हो जाते हैं तथा वह पुरुष जिसको अपने हाथ से स्पर्श करता है, जिससे जिह्वा से खाता है ॥ २० ॥ वह सब उसके लिए अमृत हो

Vedana Sangraham

Scanned by CamScanner

भक्षितं तृप्तिमत्याशु नरस्य तस्य सुव्रते ! ।
तथाऽस्यां पठ्यमानायां जीर्यते नाऽत्र संशयः॥ २२॥
नृणां रक्षाकरी देवी सर्वसिद्धिकरी स्मृता ।
सर्वमन्त्रविनाशी च गोलकस्थान्तरः परा ॥२३॥

जाता है । उस पुरुष की कदापि मृत्यु नहीं होती । और जो साधक इसको पढ़ता है उसको कभी कृत्रिम (बनावटी) तथा कठिन कष्ट नहीं होता ॥ २१ ॥

हे सुव्रते, जो पुरुष प्रत्यङ्गिरा का पाठ करता है उसको भोजन शीघ्र ही तृप्ति प्रदान करता है, तथा पच जाता है । और इसके पढ़ने से कभी वार्द्धक्य (बुढ़ौती) अनुभव नहीं होता, यह निःसन्देह है ॥ २२ ॥

यह प्रत्यंगिरा मनुष्यों की रक्षा करने वाली है, सिद्धि देने वाली है और यह परा है तथा गोलोक

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

सर्वव्याधिहरी विद्या सिद्धिदात्री महेश्वरी ।
प्राप्नोति वसुधां सर्वं रिपुहस्तगतां श्रियम् ॥२४॥
वशास्तस्यैव तिष्ठन्ति शत्रवः प्राणहारकाः ।
अभ्यस्यतां याति विद्यां सिद्धिविद्याप्रसादतः॥२५॥
अबला च वशाद्यस्य सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः ।

में निवास करने वाली है। इनके सामने सभी मन्त्रों का प्रभाव नष्ट हो जाता है ॥ २३ ॥ यह महाविद्या सम्पूर्ण व्याधियों का विनाश करने वाली है, सिद्धि देने वाली है। महाविद्या की उपासना करने वाला पुरुष शत्रु के हाथ में गयी हुई भूमि को भी प्राप्त कर लेता है ॥ २४ ॥

महाविद्या की उपासना करने से प्राणहारक शत्रु भी उसके वश में हो जाते हैं। इस सिद्ध विद्या के बारम्बार अनुष्ठान से मनुष्य विद्या को प्राप्त कर लेता है ॥ २५ ॥ अनेक सुन्दरी स्त्रियाँ, उस पुरुष के

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

चराऽचरमिदं सर्वं स-शैल-वन-काननम् ॥२६॥
नर-नारी-समाकीर्णं साधकस्य च सुव्रते ! ।
सर्वत्र वशतां यान्ति यजमानस्य नित्यशः ॥२७॥
गोलकस्य प्रभावेण प्रत्यङ्गिरा-प्रभावतः ।
त्रिपुरश्च मया दग्ध इमां विद्यां च बिभ्रता ॥२८॥
निर्जिताश्चाऽसुराः सर्वे देवैर्विद्याभिमानिभिः ।
गोलकं च प्रवक्ष्यामि भैषज्यं ते च सुव्रते ॥२९॥

वश में हो जाती हैं। हे सुव्रते, यह शैल कानन समेत सारा चराचर विश्व, जो नर-नारी समाकीर्ण है, उस साधक के वश में हो जाते हैं ॥ २६-२७ ॥

गोलक यंत्र के प्रभाव से तथा प्रत्यङ्गिरा के प्रभाव से और इस महाविद्या के धारण से ही मैंने त्रिपुर को जलाया ॥ २८ ॥ जिस गोलक के प्रभाव से देवताओं ने असुरों पर विजय प्राप्त किया, हे सुव्रते, उस गोलक का निरूपण करता हूँ ॥२९॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

पञ्चवर्णैः पञ्चदलैः द्वारर्धं द्वारशोभितम् ।
द्वात्रिंशत्पत्रमध्ये तु लिखेन्मन्त्रस्य दैवतम् ॥३०॥
कूटस्थं कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम् ।
फट्कारेण च संयुक्तं रक्षेच्च साधकोत्तमः ॥३१॥
विष्णुक्रान्तां मदनकं कुंकुमं रोचनं तथा ।
आरुष्करं विषारिष्टं सिद्धार्थं मालतीं तथा ।
एतद् द्रव्यगणं भद्रे ! गोलमध्ये निधापयेत् ॥३२॥

कमल के चारों ओर पाँच-पाँच रंग के पाँच पत्रों के मध्य बत्तीस पत्रों में फट् के सयुक्त मन्त्र को लिखे ॥ ३० ॥ उस कमल के दशों दिशाओं में पाँचों बीज स्थापित करे ॥ ३१ ॥

विष्णुकान्ता, दमनक, कुंकुम तथा रोचन, अरुष, विषारिष्ट, सिद्धार्थ तथा मालती आदि अष्टगन्ध को गोलक के मध्य में स्थापित कर,

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

सम्भृतं धारयेन्मन्त्री साधको मन्त्रवित् सदा ।
अधुना सम्प्रवक्ष्यामि प्रत्यङ्गिरां सुभाषिताम् ॥३३॥
दिव्यैर्मन्त्रपदैश्चित्तैः सुखोपायैः सुखप्रदैः ।
पठेद्रक्षाभिधानेन मन्त्रराजः प्रकीर्तितः ॥३४॥
अथाऽतो मन्त्रपदानि भवन्ति । तानि मत्राण्युच्यन्ते-

ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्यें-

॥ ३२ ॥ मन्त्रवेत्ता साधक को धारण करना चाहिए । हे देवि, अब हम प्रत्यंगिरा स्तोत्र को तुम से कहता हूँ, सुनो ॥ ३३ ॥

स्वस्थ चित्त होकर, सुख का साधनभूत अतः सुख देने वाले इस मन्त्र के प्रत्येक पदों को सुललित रूप से पढ़ना चाहिए । यह मन्त्र रक्षात्मक है और सभी मन्त्रों का राजा है ॥ ३४ ॥

'ॐ नमः शिवाय सहस्रसूर्येक्षणाय' से लेकर 'ऐं हुं हुं फट् स्वाहा' तक प्रत्यंगिरा के माला मन्त्र हैं ।

9444188158

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

क्षणाय ॐ अनादिरूपाय अनादिपुरुषाय
पुरुहूताय महामयाय महाव्यापिने
महेश्वराय ॐ जगत्साक्षिणे सन्ताप.
भूतव्यापिने महाघोराऽतिघोराय ॐॐ
महाप्रभावं दर्शय दर्शय ॐ ॐ हिलि
हिलि ॐ हन हन ॐ गिलि गिलि ॐ
मिलि मिलि ॐ ॐ भूरि भूरि विद्युज्जिह्वे
ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धम धम
बन्ध बन्ध मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय
विध्वंसय सर्वान् दुष्टान् ग्रस ग्रस
पिब पिब नाशय नाशय त्रासय त्रासय

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

भ्रामय भ्रामय दारय दारय द्रावय द्रावय
दर दर विदुर विदुर विदारय विदारय
रं रं रं रं रं रक्ष रक्ष त्वं मां साधकं मां
पाठकं च रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा ।

ऐँ ऐँ हुँ हुँ रक्ष रक्ष सर्वभूत-
भयोपद्रवेभ्यो महामेघौघ-सर्वतोऽग्नि-
विद्युदर्क-संवर्त-कपर्दिनि ! दिव्यकणिका-
म्भोरुह-विकच-पद्ममालाधारिणि ! शिति-
कण्ठाभखट्वाङ्ग कपालधृक् व्याघ्राजिन-
धृक् परमेश्वरप्रिये ! मम शत्रून् छिन्धि
छिन्धि भिन्धि भिन्धि विद्रावय विद्रावय

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

देवता-पितृ-पिशाचोरग-नागा-ऽसुर-गरुड-
गन्धर्व-किन्नर-विद्याधर-यक्ष-राक्षसान्
ग्रहाँश्च स्तम्भय स्तम्भय ये च धार-
कस्य पाठकस्य वा स-परिवारस्य
शत्रवस्तान् सर्वान् निकृन्तय निकृन्तय
ये च सर्वे मम अविद्यां कर्म कुर्वन्ति
कारयन्ति वा तेषाम् अविद्यां स्तम्भय
स्तम्भय तेषां देशं कीलय कीलय तेषां
बुद्धिं घातय घातय ग्रामं घातय घातय
रोमं कीलय कीलय शत्रु स्वाहा ।

ॐ ॐ विश्वमूर्ते महातेजसे ॐ

VedantaSangraham

Scanned by CamScanner

जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां
विद्यां स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ
जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां शिरमुखे
स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ
ठः ठः मम शत्रूणां नेत्रे स्तम्भय
स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः
मम शत्रूणां हस्तौ स्तम्भय स्तम्भय
ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां
दन्तान् स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः
ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां जिह्वां
स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

ॐ ठः ठः मम शत्रूणाम् उदरं स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां नाभिं स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां गुह्यं स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां पादौ स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां सर्वेन्द्रियाणि स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां कुटुम्बानि स्तम्भय स्तम्भय ॐ जः ॐ जः ॐ

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

ठः ठः मम शत्रूणां स्थानं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां देशं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां मण्डलं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः मम शत्रूणां ग्रामं कीलय कीलय ॐ जः ॐ जः ॐ ठः मम शत्रूणां प्राणान् स्तम्भय स्तम्भय ॐ सर्वसिद्धि-महाभागे ! मम धारकस्य पाठकस्य वा स परिवारस्य शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा । ॐ

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

हुँ हुँ हुँ हुँ हुँ फट् स्वाहा। ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ यं यं यं यं यं रं रं रं रं रं लं लं लं लं
लं वं वं वं वं वं शं शं शं शं शं षं षं षं
षं षं सं सं सं सं सं हं हं हं हं हं
क्षं क्षं क्षं क्षं क्षं ह्रौं ह्रीं ह्रौं ह्रीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं हुं हुं हुं हुं हुं फट्
स्वाहा। ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः
ॐ हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ जूं सः फट्
स्वाहा। ॐ नमो भगवति प्रत्यङ्गिरे! मम
धारकस्य पाठकस्य वा स-परिवारस्य
सर्वतो रक्षां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

ॐ जः ॐ जः ॐ ठः ठः ॐ हुं हुं हुं हुं ॐ हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवति ! दुष्टचण्डालिनि ! त्रिशूल-वज्रा-ऽङ्कुश - शक्तिधारिणि ! रुधिर-मांसल-वसाभक्षिणि ! कपालखट्वाङ्गधारिणि ! मम शत्रून् छेदय छेदय दह दह हन हन पच पच धम धम धम मथ मथ सर्वदुष्टान् ग्रस ग्रस ॐ ॐ हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ हुं हुं हुं हुं हुं फट् स्वाहा।

ॐ ॐ ह्रीं दंष्ट्राकरालिनि ! मम कृते

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र-प्रयोग-विषचूर्ण-शस्त्राद्य-
विचार-सर्वोपद्रवादिकं येन कृतं कारितं
कुरुते कारयन्ति करिष्यन्ति वा तान्
सर्वान् हन हन हन प्रत्यङ्गिरे ! त्वं मां
धारकस्य स-परिवारकं रक्ष रक्ष हुं हुं
हुं हुं हुं फट् स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
स्फ्रें स्फ्रें हुँ हुँ फट् स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं
श्रीं मम शरीरे रक्ष रक्ष फट् स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं माहेश्वरि ! मम नेत्रे
रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें
स्फ्रें हुं ब्रह्माणि ! मम शिरो रक्ष रक्ष

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं कौमारि! मम वक्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं वैष्णवि! मम कण्ठं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं नारसिंहि! मम बाहू रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं वाराहि! मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं ऐन्द्रि! मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं चामुण्डे! मम गुह्यं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ माहेश्वरि ! मम जंघे रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं मोहिनि ! मम शत्रून् मोहय मोहय स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ हुँ प्रत्यङ्गिरे ! मम शरीरं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

कूटस्तथा कुरुते दिक्षु विदिक्षु बीजपञ्चकम् ।
फट्कारेण समापेतं रक्ष त्वं साधकोत्तमे ! ॥१॥

आठों दिशाओं के मध्य भाग में पाँच बीज एवं फट्कार से युक्त हे देवि, आप मेरी रक्षा करो ॥१॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

स्तम्भिनी मोहिनी चैव क्षोभिणी द्राविणी तथा ।
जृम्भिणी भ्रामरी रौद्री तथा संहारिणीति च ॥२॥
शक्तयः शोषिणी चैव शत्रुपक्षनियोजितः ।
साधिता साधकेन्द्रेण सर्वशत्रुविनाशिनी ॥३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं स्तम्भिनि !
मम शत्रून् स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं मोहिनि !

---

१. स्तम्भिनी, २. मोहिनी, ३. क्षोभिणी, ४. द्राविणी, ५. जृम्भिणी, ६. भ्रामरी, ७. रौद्री, ८. संहारिणी और ९. शोषिणी ये नौ शक्तियाँ श्रेष्ठ साधक के द्वारा साधित तथा शत्रुपक्ष में नियोजित होने पर समस्त शत्रुओं का विनाश करती हैं ॥ २-३ ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

मम शत्रून् मोहय मोहय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं भ्रामिणि मम शत्रून् भ्रामय भ्रामय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं रौद्रि! मम शत्रून् रौद्रय रौद्रय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं संहारिणि! मम शत्रून् संहारय संहारय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुँ शोषिणि! मम शत्रून् शोषय शोषय स्वाहा।

य इमां धारयेद् विद्यां त्रिसन्ध्यं वाऽपि यः पठेत्।

जो मनुष्य इस विद्या को अर्थात् इस प्रत्यंगिरा

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

सोऽपि दुष्टान्तको भूत्वा हन्याच्छत्रून् न संशयः ।४।
सर्वं हि रक्षयेद् विद्यां महाभय-विपत्तिषु ।
महाभयेषु घोरेषु न भयं विद्यते क्वचित् ॥
सर्वान् कामानवाप्नोति मर्त्यो देवि ! न संशयः।५।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्फ्रें स्फ्रें हुं प्रत्यङ्गिरे ! विकटदंष्ट्रे ! ह्रीं ह्रीं कालिकेलि ! स्फ्रें

के मन्त्र को धारण करता है और तीनों सन्ध्याओं में इसका पाठ करता है वह दुष्ट शत्रुओं को मारने में पूर्ण समर्थ होता है, इसमें संशय नहीं है ॥ ४ ॥ महाभय तथा विपत्ति काल में यह विद्या रक्षा करती है। घोर भयंकर स्थान में भी यह भयमुक्त करने वाली है। हे देवि, अधिक क्या कहें, इसके जप और पाठ करनेवाले प्राणियों को सब-कुछ निःसन्देह प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

स्फ्रौं कारिणि ! मम शत्रून् छेदय छेदय स्वादय स्वादय सर्वान् दुष्टान् मारय मारय खड्गेन छिन्धि छिन्धि किलि किलि चिकि चिकि पिब पिब रुधिरं स्फ्रें स्फ्रें किरि किरि कालि कालि महाकालि महाकालि श्रीं ह्रीं ऐं हुं हुं फट् स्वाहा।

अष्टोत्तरशतं जपेत् साक्षात् सिद्धीश्वरो भवेत् ।
ऋषिस्तु भैरवो नाम छन्दोऽनुष्टुप्-प्रकीर्तितम् ।
देवता कौशिकी प्रोक्ता नाम प्रत्यङ्गिरैव सा ।६।

उपर्युक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करने से मनुष्य सिद्धों का राजा हो जाता है। इस मन्त्र के भैरव ऋषि एवं अनुष्टुप् छन्द और

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

कूर्चबीजं षडङ्गानि कल्पयेत् साधकोत्तमः ।
सर्वाकृष्टोपचारैस्तु ध्यायेत् प्रत्यङ्गिरां शुभाम्॥७॥

ध्यानम्

खड्गं कपालं डमरुं त्रिशूलं
सम्बिभ्रतीं चन्द्रकलावतंसम् ।
पिङ्गोर्ध्वकेशी-सित-भीमदंष्ट्रा
भूयाद् विभूत्यै मम भद्रकाली ॥८॥

कोशिकी देवता है। यही कौशिकी प्रत्यंगिरा के नाम से सुविख्यात है॥ ६ ॥ उत्तम साधक षडंग-न्यास तथा कूर्चबीज करे। भगवती के प्रसन्न करने वाले अनेक उच्चारों को एकत्रित कर प्रत्यंगिरा का ध्यान करना चाहिए ॥ ७ ॥

ध्यान—वह भद्रकाली हमारा कल्याण करें, जो खड्ग, कपाल, डमरू तथा त्रिशूल को धारण करने वाली हैं। जिनके मस्तक में चन्द्रकला

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

एवं ध्यात्वा जपे-मन्त्रमेकविंशति वासरान् ।
शत्रून् सन्नाशयेत्तं च प्रकारोऽयं सुनिश्चितम्॥९॥
अथाऽष्टम्यामर्धरात्रौ शरत्काले महानिशि ।
आराधिता च सा काली तत्क्षणात् सिद्धिदा भवेत्॥

सुशोभित है, जिनके केश पीले तथा ऊपर की ओर उठे हुए हैं, जिनके दंत अत्यन्त चमकीले तथा उग्र-भयंकर हैं ॥८॥

इस प्रकार प्रतिदिन भगवती प्रत्यंगिरा का ध्यान कर इक्कीस दिन पर्यन्त भगवती के मन्त्र का जप करना चाहिए । यह विधि निश्चित ही शत्रुओं का विनाश करने वाली है ॥९॥ शरत्-काल के नवरात्र में अष्टमी के दिन अर्धरात्रि के महानिशा में आराधन करने से भगवती अवश्य ही मनोरथ को पूर्ण करने वाली होती है ॥ १० ॥ सम्पूर्ण

VedantaSangraham

Scanned by CamScanner

सर्वोपचार-सम्पन्ना रक्तवस्त्र-फलादिभिः ।
पुष्पैश्च रक्तवर्णैश्च साधयेत् कालिकां पराम् ॥११॥
वर्षादूर्ध्वमजं मेषं मृगं वा विविधं बलिम् ।
दद्यात् पूर्वं महेशानि ! ततस्तु जपमाचरेत् ॥१२॥
एकहायनतः काली सत्यं सत्यं सुसिद्धिदा ।

पूजन के सामग्री से युक्त हो लाल वस्त्र, लाल फल तथा लाल फूलों से द्वारा भगवती महाकाली का पूजन करना चाहिए ॥ ११ ॥

एक वर्ष तक निरन्तर जप करने के उपरान्त अज (बकरा), मेष (भेड़), मृग तथा अन्य प्रकार की बलि देनी चाहिए ॥ १२ ॥

यह महाकाली एक वर्ष में सिद्धि प्रदान करने वाली है, यह बात सत्य है, सत्य है, प्रत्यंगिरा

Vedanta Sangraham
Scanned by CamScanner

मूलमन्त्रेण रात्रौ च होमं कुर्याद् विक्षणः ॥१३॥
मरीच-लाज-लवणैः सर्षपैर्मारणं भवेत् ।
महासङ्कटरोगे च न भयं जायते क्वचित् ॥१४॥
प्रेतपिण्डं समादाय गोलकं कारयेत्ततः ।
साध्यनामाङ्कितं कृत्वा शत्रुमय्यां च पुत्तलीम्॥१५॥

महाकाली के मूल मन्त्र से रात्रि में ही विद्वान् पुरुष को होम करना चाहिए ॥ १३ ॥ मरिच, लावा तथा नमक और सरसों का हवन करने से मारण प्रयोग किया जाता है, इतना ही नहीं उपर्युक्त विधि के हवन से महासंकट रोग तथा भय उत्पन्न नहीं होते ॥१४॥

प्रेत के पिण्ड को लेकर गोलक यन्त्र बनवावे फिर उस पर शत्रु का नाम लिखकर शत्रु का पुत्तला बनाकर ॥१५॥ उसमें प्राणप्रतिष्ठा करे । चिता की

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

जीवं तत्र विधायैव चिताग्नौ प्रक्षिपेत् ततः ।
एकायुतं जपं कृत्वा त्रिरात्रान्मरणं रिपोः ॥१६॥

महाज्वरो भवेत्तस्य तप्ततास्रशलाकया ।
गुदाद्वारे प्रविन्यस्य सप्ताहान्मरणं रिपोः ॥१७॥

० ०

अग्नि में हवन करे। दस हजार जप करे तो निश्चय ही तीन रात के भीतर शत्रु मर जाता है ॥ १६ ॥

जलते हुए तामें की सलाई से शत्रु के पुत्तल बना कर उपर्युक्त विधि से गुदा द्वार पर दागे तो शत्रु को महा ज्वर उत्पन्न हो जाता है और वह सात रात भीतर ही मर जाता है ॥ १७ ॥

VedantaSangraham

Scanned by CamScanner

पुष्प-समर्पण-विधिः

एकविंशतिदिने आद्यन्तं जपं कृत्वा नित्यं १०८,

भुक्तौ मुक्तौ च शान्तौ च श्वेतपुष्पं विनिर्दिशेत् ।
आकृष्टौ च वशीकारे रक्तं पुष्पं विनिर्दिशेत् ।१।
स्तम्भने मोहने चैव पीतपुष्पं विनिर्दिशेत् ।
उच्चाटने मारणे च कृष्णपुष्पं विनिर्दिशेत् ।२।

इक्कीस दिन तक आदि से अन्त तक जप कर, भोग, मुक्ति तथा शान्ति के लिए एक सौ आठ सफेद फूल चढ़ावे। आकर्षण तथा वशीकरण के लिए जप के अन्त में एक सौ आठ लाल फूल चढ़ावे। स्तम्भन तथा मोहन के लिए एक सौ आठ पीला फूल चढ़ावे, उच्चाटन तथा मारण की प्रक्रिया में एक सौ आठ काले फूल को चढ़ावे। यह पूजा तथा जप

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

अनेनैव प्रकारेण ध्यानं स्यात् पुष्पवर्णकम् ।
एवं पुष्पविधिः प्रोक्तः पूजादौ जपकर्मणि ॥३॥

इति श्रीकुञ्चिकातन्त्रे चण्डोग्रशूलपाणितन्त्रे 'देवरिया'-मण्डलान्तर्गत-'मझौली राज्य' निवासि-आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्त मिश्रशास्त्रि-संस्कृत प्रत्यङ्गिरास्तोत्रं समाप्तम् ।

करने के लिए फूल की विधि है। और उपर्युक्त तत्-तत् कार्यों में ध्यान के लिए उस-उस वर्ण के पुष्प लेकर ही ध्यान करना चाहिए ॥ १-३ ॥

इस प्रकार पण्डित श्रीअन्तशरणमिश्रात्मज श्रीशिवदत्तमिश्र-शास्त्रिकृत 'शिवदर्त्ती' भाषाटीका में कुञ्चिकातन्त्र के चण्डोग्र-शूलपाणितन्त्र नामक खण्ड में प्रत्यंगिरा स्तोत्र समाप्त हुआ ।

० ०

Vedanta Sangraham
Scanned by CamScanner

अथ प्रत्यंगिरामंत्रपुरश्चरणम्

ध्यानम् (मेरुदण्डे)

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि परकृत्य-निवारिणीम् ।
देवीं प्रत्यङ्गिरां नाम सर्वापद् विनिवारिणीम् ॥
ॐ अँ कँ चँ तथा टँ तँ पँ ह्लँ भों ह्रीं समुच्चरेत् ।
हुँस उक्त्वा हुँ तथाऽस्त्रं स्वाहान्तं षोडशाक्षरः ।
मुनिर्विधाता छन्दोऽष्णिग् देवता: षट् प्रकीर्तिताः ।
महावायुर्महापृथ्वी महाकाशस्तस्थैव च ॥
महासमुद्रनामा च महापर्वत एव च ।
महाग्निश्चेति हुँ बीजं ह्रीं शक्तिः परिकीर्तिता ॥
लज्जया तु षडङ्गानि षड्दीर्घान्वितयाऽऽचरेत् ।
मन्त्रदेवींस्ततो मन्त्री ध्यायेत् सुस्थिरमानसः ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

ध्यानम्

नानारत्नार्चिराक्रान्तं वृक्षाम्भःस्रवणर्युतम् ।
व्याघ्रादिपशुभिर्व्याप्तं सानुयुक्तं गिरिं स्मरेत् ॥

मत्स्य-कूर्मादि-बीजाढ्यं नवरत्न-समन्वितम् ।
घनच्छायं सकल्लोलमकूपारं विचिन्तयेत् ॥

ज्वालावली-समाक्रान्तं जगत्-त्रितयमद्भुतम् ।
पीतवर्णं महावह्निं संस्मरेच्छत्रुशान्तये ॥

त्वरा समुत्थरावौघमलिनं रुद्धभूदिवम् ।
पवनं संस्मरेद् विश्वजीवनं प्राणरूपतः ॥

नदी - पर्वत - वृक्षादि-कलिताग्रास-सङ्कुला ।
आधारभूता जगतो ध्येया पृथ्वीह मन्त्रिणा ॥

सूर्यादिग्रह - नक्षत्र - कालचक्र-समन्वितम् ।
निर्मलं गगनं ध्यायेत् प्राणिनामाश्रयः पदम् ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

पुरश्चरणमाह

एवं षड्देवता ध्यात्वा सहस्राणि तु षोडश ।
जपेन्मन्त्रं दशांशेन षड्द्रव्यैर्होममाचरेत् ॥
व्रीहयस्तण्डुला आज्यं सर्षपाश्च यवास्तिला ।
एतैर्हुत्वा यथाभागं पीठे पूर्वोदिते यजेत् ॥

मालामन्त्रस्तत्रैव

अथ प्रत्यङ्गिरा-माला-मन्त्रः सिद्धः प्रकीर्त्यते ।
ॐ ह्रीं नमः कृष्णवाससेविंशतेविश्वसाहस्रहिम् ॥
सिनि सहस्रवदने महाबले पराजिते ।
प्रत्यङ्गिरे पदसैन्य - परकर्मपदं वदेत् ॥
विध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनीति ततो वदेत् ।
सर्वभूतेति दमनि सर्वदेवान् वदेत् ततः ॥
बन्धयुग्मं सर्वविद्या द्विश्छिन्धि क्षोभयद्वयम् ।

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

परयन्त्राणीति वदेत् स्फोटय द्वितयं ततः ॥
सर्वशृङ्खलाँस्त्रोटय त्रोटय ज्वल चोच्चरेत् ।
ज्वालाजिह्वे करालेति वदने प्रत्यमुच्चरेत् ॥
गिरे हीं नम इत्येष सपादशतवर्णवान् ।
ब्रह्माऽनुष्टुब् मुनिश्छन्दो देवी प्रत्यङ्गिरा मता ॥
बीजशक्ती तारमाये कृत्यानाशेति योजनम् ।
षडङ्गानां विधिश्चाऽत्र षड्दीर्घान्वितमायया ॥

ध्यानम्

सिंहारूढाऽतिकृष्णाङ्गीं ज्वालावक्त्रां भयङ्कराम् ।
शूलखड्गकरां वम्त्रे तधतीं नूतने भजे ॥

पुरश्चरणम्

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं तिलराजिकाः ।
हुत्वा सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगेषु शतं जपेत् ॥

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner

ग्रह-भूतादिकारिष्टं सिञ्चेन्मन्त्रं जपन् जलैः ।
विनाशयेत् परकृतं यन्त्र-मन्त्रादि-साधनम् ॥

"अथ मन्त्रान्तरं (सिद्धान्तसंग्रहे)

ॐ यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां वधूमिव ।
तां ब्रह्मणाऽपनिर्नुद्मप्रत्यक् कर्तारमिच्छतु ॥

ह्रौं मुन्याद्या विनियोगान्ता मूलमन्त्रवदस्य तु ।
षडङ्गानि च पादेन पादार्धैश्चरणेन च ॥
कुर्याद् वेदादि-षड्दीर्घ-हृल्लेखापुटितेन च ।
शिरो - भ्रू-मध्यवदने - गल - बाहुद्वयेष्वथ ॥
हृन्नाभि-पार्श्व-कट्यन्धु-पादेषु पदशो न्यसेत् ।
व्यापकान्ते समस्तेन कृत्वा ध्यायेन् महेश्वरीम् ॥
खड्गचर्मधरां कृष्णां मुक्तकेशीं विवाससम् ।
दंष्ट्राकरालवदनां भीषाभां सर्वभूषणाम् ॥

Vedanta Sangraham
Scanned by CamScanner

ग्रसन्तीं वैरिणं ध्यायेत् प्रेरितां शिवतेजसा ।"

पुरश्चरणमाह

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्री प्रयतमानसः ।
दशांशं जुहुयात् पश्चादपामार्गेध्म-राजिकाम् ॥
सर्पिषा च समायुक्तां ततः सिद्धो भवेन्मनुः ।
प्रयोगेषु जपेन्मन्त्रमष्टोत्तरशत बुधः ॥
तावतैव तु होमेन परकृत्या विनश्यति ।

प्रत्यङ्गिरायन्त्रम् (मेरुतन्त्रे)

त्रिकोणं च चतुःपत्रं वसुपत्रं ततः परम् ।
कलापत्रं च भूबिम्बं चतुरस्रत्रयावृतम् ॥

इति आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसम्पादिते
प्रत्यङ्गिरास्तोत्रे प्रत्यङ्गिरामन्त्र-
पुरश्चरणं समाप्तम् ।

० ०

प्रत्यङ्गिरापुरश्चरणम्

Vedanta Sangraham

Scanned by CamScanner